بسم اللہ الرحمن الرحیم والصلوۃ والسلام علی رسول اللہ و علی ازواجہ و الہ واصحابہ اجمعین الی یوم الدین

12 रबिउल अव्वल कत्तअन्न रसूलल्लाह ﷺ का यौम-ए-विसाल नही.......!

इस बात पर उम्मते मुस्लिमा मुत्तफिक है कि **कुरआन हकीम** के बाद इस उम्मत में सबसे अफ़ज़ल किताब **सहीह बुख़ारी शरीफ़** है। इस अज़ीम मज्मूआ–ए–अहादीस को सय्यिदना इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رحمۃ اللہ (अल्मुतावफ्फा-256ھ) ने रसूलुल्लाह ﷺ के विसाल-ए-मुबारक के क़रीब 210 साल के बाद एक लाख सही अहादीस में से मुन्तख़ब फरमाया और इस मजमूए में अहादीस की कुल तादाद 7275 है।

नोट: दर्जे जैल दोनो हदीसें सही मस्लिम में भी मौजद हैं।)

पूरी उम्मते मुस्लिमा के उलमा–ए–किराम और तारीख दां मुत्तफिक हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मक्कातुल मुकर्रमा से मदीनातुल मुनव्वरह हिजरत फरमाने के दसवें साल यानी 10ھ में अपने आखिरी हज के दौरान 9 जिलहिज्जा को अरफात के मैदान में जुमा (Friday) के दिन अपना आखिरी मशहूर खुतबा इर्शाद फरमाया जिसे **खुत्बतुल विदा** कहा जाता है। इसी दौरान दीन की तक्मील से मुताल्लिक आयते मुबारका भी नाज़िल हुई। और फिर इसी आख़िरी हज्जे अक्बर के फौरन बाद ही अगले साल यानी 11ھ में सफर या रबीउल अव्वल में (क्योंकि महीने से मुताल्लिक इख़्तलाफ मौजूद है) किसी ऐसी तारीख को जब्कि सोमवार (Monday) का दिन था, रसूलुल्लाह ﷺ का **विसाल हो गया** । पस अगर सोमवार (Monday) का दिन 11ھ के साल में रबीउल अव्वल की 12 तारीख़ को रियाज़ी के एतबार से (Mathematically) कतई साबित ना हो तो एक आम फहम शख्स भी बगैर किसी बहस व तकरार के असानी के साथ यह बात जरुर तस्लीम कर लेगा कि 12 रबीउल अव्वल रसूलुल्लाह ﷺ का **यौम-ए-विलादत** तो है मगर कत्तअन्न यौम-ए-विसाल नही ————————!

आइये सबसे पहले **सहीह बुख़ारी** की दर्ज ज़ैल 2 अहादीस की रोशनी मे इन तारीख़ी हकीकतों (Historical Realities) का सबूत मुलाहिज़ा फरमाएं कि :

नंबर 1: 9 जिलहिज्जा यानी यौमें अर्फ़ा को 10ھ में जुमा (Friday) का दिन था।

नंबर 2: 11ھ में रसूलुल्लाह ﷺ का विसाल सोमवार (Monday) के दिन हुवा था।

नोट: रसूलुल्लाह ﷺ का 10ھ में आखिरी हज फरमाने और 11ھ में विसाल होने के बारे में कोई इख़्तलाफ नहीं।

हदीस नंबर 1: सय्यिदना उमर फारुक رضی اللہ عنہ (अल्मुतावफ्फा –24ھ) रिवायत करते हैं कि एक यहूदी ने उनसे कहा कि ऐ अमीरुल मौमिनीन! तुम्हारी किताब में एक आयत है जिसे तुम तिलावत करते हो अगर वह आयत हम यहूदियों पर नाजिल होती तो हम उस दिन को ईद मनाते। सय्यिदना उमर फारुक رضی اللہ عنہ ने फरमाया : वह कौनसी आयत है? यहूदी कहने लगा वह आयत है :

اَلْیَوْمَ اَکْمَلْتُ لَکُمْ دِیْنَکُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَیْکُمْ نِعْمَتِیْ وَرَضِیْتُ لَکُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا ط

तर्जुमा कन्जुल ईमान: "आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी। और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसंद किया" **(सूरह अल मायदा आयत न० 3)**

(यहूदी का इशारा इस तरफ था कि दीन मुकम्मल होने की खुशी में हम उस दिन को इद की तरह मनाते) सय्यिदना उमर फारुक رضی اللہ عنہ ने इर्शाद फरमाया: हम उस दिन को और उस जगह को भी पहचानते हैं जब यह मुबारक आयत रसूलुल्लाह ﷺ पर नाजिल हुई थी। आप ﷺ उस दिन अरफात के मैदान में तशरीफ़ फरमा थे। और ख़ुदा की क़सम! वह जुमा (Friday) का ही दिन था (यानी हम मुसलमानों के लिये तो वह दिन यानी 9 जिलहिज्जा (यौमें अर्फ़ा) वैसे भी जुमा होने के सबब ईद का दिन था।)

(صحیح بخاری " کتاب الایمان" حدیث نمبر 43)

हदीस नंबर 2: सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ (अल्मुतावफ्फा- 93ھ) रिवायत करते हैं कि सोमवार (Monday) का दिन था और लोग फज्र की नमाज में मशगूल थे जब्कि सय्यिदना अबूबक्र **सिद्दीक** رضی اللہ عنہ (अल्मुतावफ्फा- 13ھ) उनकी इमामत फ़रमा रहे थे के अचानक रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यदना आयशा सिद्दीक رضی اللہ عنہا (अल्मुतावफ्फा- 58ھ) के हुजरा मुबारका (जो मस्जिदे नबवी ﷺ से मुलहिका था) का पर्दा उठाया तो आप ﷺ सहाबा किराम رضی اللہ عنہم को हालते नमाज़ में सफे बनाए हुए देखकर मुस्कुरा पड़े (कि तमाम लोग मेरे मुकर्रर किये हुए इमाम पर मुत्तफिक हैं) इसी दौरान सय्यदना अबूबक्र **सिद्दीक** رضی اللہ عنہ यह गुमान करते हुए कि शायद रसूलुल्लाह ﷺ नमाज की इमामत फरमाने के इरादे से आए हैं, अपनी एडियों पर पीछे को हटने लगे और मुसलमानों ने जब आप ﷺ को देखा तो खुशी की **बाईस** नमाज के दौरान फित्ना(यानी इम्तिहान) में पड़ जाने का इरादा किया (यानी नमाज छोड कर रसूलुल्लाह ﷺ के दीदार की जल्दी करने लगे क्योंकि पिछले 3 दिन से रसूलुल्लाह ﷺ की बीमारी की शिद्दत की **बाईस** अपने घर से बाहर तशरीफ़ न ला सके थे) रसूलुल्लाह ﷺ ने जब (सहाबा–ए–किराम رضی اللہ عنہم की अकीदत का)यह मन्जर देखा तो अपने दस्ते मुबारक से इशारा फ़रमाया कि अपनी नमाज मुकम्मल करो। फिर आप ﷺ हुजरा शरीफ़ में वापिस तशरीफ़ ले गये और पर्दा दोबारा लटका दिया और फिर उसी दिन ही (सुबह चाश्त के वक्त) आप ﷺ विसाल फरमा गये।

(صحیح بخاری " ابواب التطوع" حدیث نمبر 1136)

चारों (4) महीनों के नुक़ुउश

9 जुलहिज्जा 10 जुमा (Friday) से लेकर 12 रबीउल अव्वल 11 तक कुल चार (4) माह शामिल (Involve) होते हैं। मजीद यह कि चाँद का हर महीना या तो 30 दिन का या फिर 29 दिन का होता है। लिहाज़ा कुल 4 मुमकिनात(Possibilities) बनती हैं। :

नंबर 1: जुलहिज्जा 30 दिन का, मुहर्रम 30 दिन का और सफर 30 दिन का हो तो———————!

☆	जुलहिज्जा				मुहर्रम					सफर					रबीउल अव्वल		
जुमा	⑨	16	23	30	☆	7	14	21	28	☆	5	12	19	26	☆	3	10
हफ़्ता	10	17	24	☆	1	8	15	22	29	☆	6	13	20	27	☆	4	11
इतवार	11	18	25	☆	2	9	16	23	30	☆	7	14	21	28	☆	5	⑫
सोमवार	12	19	26	☆	3	10	17	24	☆	1	8	15	22	29	☆	6	13
मंगल	13	20	27	☆	4	11	18	25	☆	2	9	16	23	30	☆	7	14
बुध	14	21	28	☆	5	12	19	26	☆	3	10	17	24	☆	1	8	15
जुमेरात	15	22	29	☆	6	13	20	27	☆	4	11	18	25	☆	2	9	16

नोटः यहाँ 12 रबीउल अव्वल इतवार (Sunday) के दिन बनती है।

नंबर 2: जुलहिज्जा 30 दिन का, मुहर्रम 30 दिन का और सफर 29 दिन का हो तो———————!

☆	जुलहिज्जा				मुहर्रम					सफर					रबीउल अव्वल		
जुमा	⑨	16	23	30	☆	7	14	21	28	☆	5	12	19	26	☆	4	11
हफ़्ता	10	17	24	☆	1	8	15	22	29	☆	6	13	20	27	☆	5	⑫
इतवार	11	18	25	☆	2	9	16	23	30	☆	7	14	21	28	☆	6	13
सोमवार	12	19	26	☆	3	10	17	24	☆	1	8	15	22	29	☆	7	14
मंगल	13	20	27	☆	4	11	18	25	☆	2	9	16	23	☆	1	8	15
बुध	14	21	28	☆	5	12	19	26	☆	3	10	17	24	☆	2	9	16
जुमेरात	15	22	29	☆	6	13	20	27	☆	4	11	18	25	☆	3	10	17

नोटः यहाँ 12 रबीउल अव्वल हफ्ता (Saturday) के दिन बनती है। मजीद यह कि अगर जुलहिज्जा 30 दिन का, मुहर्रम 29 दिन का और सफर 30 दिन का हो या फिर जुलहिज्जा 29 दिन का, मुहर्रम 30 दिन का और सफर 30 दिन का हो तो भी यही दिन बनता है।

नंबर 3: जुलहिज्जा 30 दिन का, मुहर्रम 29 दिन का और सफर 29 दिन का हो तो———————!

☆	जुलहिज्जा				मुहर्रम					सफर					रबीउल अव्वल		
जुमा	(9)	16	23	30	☆	7	14	21	28	☆	7	14	21	28	☆	5	(12)
हफ़्ता	10	17	24	☆	1	8	15	22	29	1	8	15	22	29	☆	6	13
इतवार	11	18	25	☆	2	9	16	23	☆	2	9	16	23	☆		7	14
सोमवार	12	19	26	☆	3	10	17	24	☆	3	10	17	24	☆	1	8	15
मंगल	13	20	27	☆	4	11	18	25	☆	4	11	18	25	☆	2	9	16
बुध	14	21	28	☆	5	12	19	26	☆	5	12	19	26	☆	3	10	17
जुमेरात	15	22	29	☆	6	13	20	27	☆	6	13	20	27	☆	4	11	18

नोट: यहाँ 12 रबीउल अव्वल जुमा (Friday) के दिन बनती है। मजीद यह कि अगर जुलहिज्जा 29 दिन का मुहर्रम 29 दिन का और सफर 30 का हो या फिर जुलहिज्जा 29 दिन का, मुहर्रम 30 दिन का और सफर 29 दिन का हो तो भी यही दिन बनता है।

नंबर 4: जुलहिज्जा 29 दिन का, मुहर्रम 29 दिन का और सफर 29 दिन का हो तो———————!

☆	जुलहिज्जा				मुहर्रम					सफर					रबीउल अव्वल		
जुमा	(9)	16	23	☆	1	8	15	22	29	☆	7	14	21	28	☆	6	13
हफ़्ता	10	17	24	☆	2	9	16	23	☆	1	8	15	22	29	☆	7	14
इतवार	11	18	25	☆	3	10	17	24	☆	2	9	16	23	☆	1	8	15
सोमवार	12	19	26	☆	4	11	18	25	☆	3	10	17	24	☆	2	9	16
मंगल	13	20	27	☆	5	12	19	26	☆	4	11	18	25	☆	3	10	17
बुध	14	21	28	☆	6	13	20	27	☆	5	12	19	26	☆	4	11	18
जुमेरात	15	22	29	☆	7	14	21	28	☆	6	13	20	27	☆	5	(12)	19

नोट: यहाँ 12 रबीउल अव्वल जुमेरात (Thursday) के दिन बनती है।

आखिरी गुजारिश

मुस्नद राजैह बाला तहकीक़ (Research) से ये बात बिलकुल वाजेह तौर पर साबित हो गयी के 11 ھ के साल में किसी भी ऐतबार से 12 रबीउल अव्वल सोमवार (Monday) के दिन नहीं हो सकती ......